

جب میں نے کہا کہ آپکا بھائی تھا تو کہنے لگا میں نے ایک رشتہ دار سے
 بات کی تھی تو وہ کہنے لگا چپ رہ بدنام ہوتے ہیں۔ اب ذوالفقار علی بھٹو
 کی ذات کوئی پاکستانی بھی نہیں بتا سکا۔ اغلباً یہ بھی کوئی لالہ ہوگا۔ کیونکہ
 ریاستوں میں دیوان اثر لالے ہوتے ہیں کیونکہ یہ پڑھے لکھے زیادہ ہوتے
 ہیں۔ نیک آدمی اپنے آپ کو نہیں چھپا یا کرتے۔ گو پراویکاری پراویکار کرتے
 وقت احسان نہ جتاتے کہ لٹے اور اپنی اولاد کو دشمنوں سے محفوظ رکھنے کے
 لئے باہر جاتی باسی نہیں بتایا کرتے گو دشمنوں پر اسکا اندراج کیا جاتا ہے۔ حکم
 بادشاہ نہ چھپ سکتے تھے اسلئے انکے چھوٹے صاحبزادوں پر ظلم ٹھٹھا۔ خیر خدا
 کے گھر دیر ہے اندھیر نہیں۔ اب بھٹو کی باسی آگئی ہے خود کو سب سے اعلیٰ
 مسلمان ظاہر کرتا ہے۔

उमाउ रबीर जी:-

"रबीरै परमी टेक राम की उबर को पछि रागी ॥ १ ॥"
 "हरि ते मंड नै वीर छोए, ठिठरी रसा ठिठरी वे।"
 "मगउ दाम माँउ रुख लगी जाती; घुगमा घिँरु ते मउ उठपाती ॥
 रुख वे पीँडउ घामरु रब रे बोए; घामल रंग रंग जलम माँउ घेए ॥"
 "नै ई घागमल घागमली नाहिला; उठि मात घाट कोर लगी माहिला ॥
 उम रुउ घागमल रम रुउ मुर; रम रुउ लेखु उम रुउ रूप ॥"
 "रुख रबीर नै घुगम घीररै; नै घागमल रगीमाउ रैगमारै ॥"
 "घुउ पूजि पूजि घिँरु मोए उबर मुए मिरु नाए; छिँट ले नारे छिँट ले नारे उगी माँउ रुख ॥
 "रंग रबीर रम नै घिँरु; चढिँवे पर माँउ जल की जिरु ॥"
 "रबीर रंग रबे रूँ जाही घा माँगे मिलाया घराए; माँगी मुझ मिठि लरिपिला, उँई किं ठमारी गरी ॥
 "रबीर नैवी रीटे नलम वै रुगठा लठि रलाल; रुठउँ लेख माँगीमै उष रीटो रुठि रलाल ॥"
 "ठा रीरु ठा नमलमात छिँर मम रे उमउ; छिँर रबीर मुनेगड़ा, मर रे रुल जगउ ॥"
 "मन रंगलं रंगिमात छिँर रंग रंग लोरी लाहेगा; उँर उष उलहाठ ला बरही, लगी घेरु रलालेगा।
 माहउ जाउ लगे लगी रीटे, पगछि रूँ मचाहेगा; ठा मऊ उँडे ठा मऊ ठेडे ठा रंग रूप दिखोहेगा। ---
 "पूँडे रूँ पुगल पड़े माँगे मललं पड़े रुगल; रूँ रबीर ठंरु रीटे नारे नै ठा मम प्रकाश ॥"
 "रबीर माहिला मेवली नैमी मीठी घाँउ ॥
 "माँउर री रिया उरी ठा ते रुरी राँउ ॥"